Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Arts Science & Commerce College Naldurg

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Arts Science & Commerce College Naldurg

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

श्री विद्या विकास मंडल संचलित

श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगलवेढा

(हिंदी विभाग)

एवं पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

"साहित्य, समाज और संस्कृति"

खंड १ - साहित्य और समाज चिंतन

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

24) हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श
किशोर श्रीमंत ओहोळ, सोलापुर ||83

25) ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित चेतना
डॉ. नवनाथ शिंदे, सोलापुर (सांगोला) ||86

26) शिवानी के उपन्यासों में समाज
प्रा. सुनीता शिवशंकर ईश्वरकट्टी, पुणे ||89

27) गोविन्द चातक के नाटक 'काला मुँह' में अभिव्यक्त समाज
उमेश कुमार शुक्ल, सुनीता देवी, उत्तराखण्ड ||91

28) हिंदी सिनेमा और साहित्य
प्रा.डॉ. वेल्लुरे. एम. ए., उस्मानाबाद (माकणी) ||95

29) महान संत सेना के साहित्य में चित्रित सामाजिक जीवन
प्रा. राजकुमार पवार, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||97

30) संत कबीर की रचनाओं में चित्रित भारतीय समाज
प्रा. गंगाधर कोटगोंडे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||98

31) संत कबीर के साहित्य में मानवतावादी चेतना
डॉ. महेशकुमार घाडगे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||99

32) सुषमा मुनींद्र की कहानियों में वृध्द विमर्श
कु. अलका ज्ञानेश्वर घोडके, पंढरपुर ||100

33) गेंद कहानी में अभिव्यक्त वृध्द समस्या
प्रा.वालिका रामराव कांबळे, लातूर ||103

34) भारतीय समाज की समस्यामासिक समस्याओं को व्यक्त करता कवि 'जर्रा'
प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा, रईसा यासीनबेग मिर्झा, उस्मनाबाद ||104

35) हिंदी साहित्य-लेखन में नारी की भूमिका : एक सिंहावलोकन
डॉ. प्रताप केशरी होता, ओडिशा ||106

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

34

भारतीय समाज की समस्यामासिक समस्याओं को व्यक्त करता कवि 'जर्रा'

('इल्म' के संदर्भ में)

प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा
शोध निर्देशक,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नलदुर्ग, ता.तुजलापुर, जि.उस्मनाबाद (महाराष्ट्र)

रईसा यासीनबेग मिर्झा
शोध छात्रा

प्रस्तावना :-

भारत में मुस्लीम ही सबसे बडे संख्या में अल्पसंख्यांक समूह है। भारतीय लोगों का आज भी मुस्लीम समाज की ओर देखने का दृष्टिकोण ही है। भारतीय लोग उन्हें अल्पसंख्याक, वोट बैंक, आर्थिक दृष्टि से पिछडा समाज और मुस्लीम लोगों की धर्मांधता पर टिप्पणी करती है। भारतीय मुस्लीम समाज आज भी अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष कर रहा है। यह जानकारी हमें सच्चर समिती से मिलती है। सच्चर समिती की ४०३ पृष्ठ की रिपोर्ट को ३० नवंबर २००६ को लोकसभा में पेश किया गया था। देश में मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दशा जानने के लिए यह समिती गठित की थी। इस समिती से पूरे भारतीय लोगों को मालूम हो गया कि हमारे देश के मुस्लीम समाज की स्थिति अनुसूचित जाति-जनजाति से भी बद्तर है। सच्चर रिपोर्ट को जारी हुए तेरह साल बीत चुके है। इस समिती ने रिपोर्ट में बताया था कि मुस्लीम समाज का आर्थिक और शैक्षणिक रुप से विकास किया जाना चाहिए। मुस्लीम समाज के हालात सुधारे के वायदे और दावे किया लेकिन अभी परिस्थितियाँ जैसे की वैसी है। सच्चर रिपोर्ट के बाद मुस्लीम विमर्श का दौर चल रहा है। २००७ में रंगनाथ मिश्रा आयोग की रिपोर्ट आयी। २०१३ में सच्चर कमेटी की हकीकत को जानने के लिए प्रोफेसर अमिताभ कुंडू की अध्यक्षता में एक कमिटी बनवाई गई थी। इस कमिटी से पता चला कि इस दौरान मुसलमानों के हालात में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है।

मुस्लीम समुदाय अनुसूचित जाती, जनजाति और पिछडी जातियों के मुकाबले अभी भी बहुत पिछडा है। मुस्लीम समाज की अनेक समस्याएँ हैं, जैसे बेरोजगारी, अंधविश्वास, शोषण, आर्थिक दुरवस्था, पारिवारिक तनाव, जातीयता आदि। वास्तव में मुस्लीम समाज की मानसिकता और उनके आचरण पर खुले मन से विचार होना जरुरी है। डॉ. जर्रा काझी ने अपने 'इल्म' इस कवितासंग्रह से भारतीय मुस्लीम समाज की दिक्कतों को दूर करते हुए उन्हें जागृत करने का प्रयास किया है। जर्रा जी ने भारतीय मुसलमानों को शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनितीक, सांस्कृतिक, मानसिक आदि बातों को लेकर भारतीयों के साथ मुस्लीम समाज को मुख्य प्रवाह में लाने का प्रयास किया है।

२६ अगस्ट १९६५ में महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के कलम नामक छोटे से गाँव मे जन्में डॉ. जर्रा का पूरा नाम काझी अब्दुल सत्तार अब्दुल गफ्फार है जो जर्रा उपनाप से काव्यसाधना करते है। इनकी अभी तक अठराह से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है जिनमें छ: काव्यसंग्रह हैं। जिन्होंने भारत और भारत के बाहर पाँच हजार से अधिक हास्य-व्यंग्यात्मक कार्यक्रम और समाज प्रबोधनपर व्याख्यान दिये हैं। उनका २०१६ में प्रकाशित 'इल्म' वैचारिक कविताओं का संग्रह है जिसमें भारतीय मुसलमानों की यथास्थिति को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

जिसमें मुख्यत: भारतीय मुसलमानों की शैक्षिक समस्या, सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनैतिक समस्या और धार्मिक समस्याओं को मुखरित किया गया है। जिसका विवेचन मैंने इस शोधपत्र में किया है।

१. शैक्षिक समस्या :-

डॉ. जर्रा काझी जी ने अपने 'इल्म' कविता संग्रह में शिक्षा का महत्व बताकर मुस्लीम समाज को शिक्षा ग्रहण करने के लिए कहते है और शिक्षा को अनिवार्य बताते हैं। शिक्षा को लेकर हम सामाजिक असमानता को मिटा सकते है। सालोंसाल के पिछडेपन को दूर कर सकते हैं। भारत देश में कुल आबादी के लगभग १९ फिसदी आबादी मुसलमानों की है। अफसोस इस बात का है कि इनमें साक्षरता की दर अन्य वर्गो की अपेक्षा कम है। शिक्षित व्यक्ति समाज का आइना होता है। मुस्लीम धर्म में शिक्षा ग्रहण करना हर पुरुष एवं महिला के लिए अनिवार्य माना है। जर्राजी ने शिक्षा का महत्व बताकर बड़े गर्मजोशी के साथ मुस्लीम समाज को जागृत करने का प्रयास किया है।

Scanned with CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

"अगर चाहते हो कामयाबी
बदलना हात की लकीरें
अरे! तालीम करो हासिल
बदल जाएँगी तहेरीरे !"[१]

मुस्लीम परिवारों मे शिक्षा के प्रति उदासिनता है। इसे नकारा नहीं जा सकता। लेकिन जर्राजी कहते है कि,

"पहली आयत कुरआर की है इल्म को लेकर
है हुक्म खुदा का इससे जुड जाना चाहिए।"
दुनिया के सारे उलमाओं से है इल्तेजा
इब इल्म के पैग़ाम को पहुँचाना चाहिए।[२]

२. सामाजिक समस्या :-

जर्रा काझी जी ने इल्म में भारतीय मुस्लीम समाज की सामाजिक दशा को व्यक्त किया है। मुसलामनों के पास अपनी दशा बदलने के लिए उपाय नहीं है। मुस्लीम समाज को योग्य दिशा ढूँढने की जरुरत है। शिक्षित मुस्लीम लोगों के बीच कोशिशें हो रही है लेकिन यह प्रयास सीमित रुप में ही है। इसको अभी राष्ट्रीय रुप नहीं मिल रहा है। इसके लिए सामाजिक संगठनों की आवश्यकता है। आपसी संबंधों को अपनाकर उसमें एकता दिखाना होगा। एक-दूजे के आतंरिक व्दव्दं को भूलकर मुस्लीम समाज के विकास के लि ए सभी को यह कार्य करना होगा। जर्राजी कहते है कि, "कामयाबी दूसरे के सहारों पर नहीं मिलती बल्कि अपने ही दम पर मिलती है।"[३] उन्होने ने भारतीय मुस्लीम समाज को मुख्य प्रवाह में लाने का प्रयास किया है।

"स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व और न्याय जहाँ भरे हो,
वो भारत का अजीम संविधान आपके साथ है।"[४]

अपने देश में मुस्लीम समाज की और आतंकवादी दृष्टी से देखा जाता है। मुस्लीम समाज में किसी को मारना, किसी को दुःख देना यह मुसलमानों का ईमान नहीं है। जर्रा जी अपनी कविता 'आतंकवादी कभी मुसलमान नहीं होता' में वे कहते हैं,

"नाहक किसी को मारना, ईमान नहीं होता,
आतंकवादी कभी मुसलमान नहीं होता,
एक दरिन्दे की करतूत
सारी कौम वदनाम बदनाम कर डाली
हमारे देशप्रेम का, ये इनआम नहीं होता।"[५]

३. आर्थिक समस्या :-

भारतीय मुसलमानों के हालात सबसे खराब है। मुसलमानों में गरीबी पूरे देश के औसत से ज्यादा है। मुस्लीम समाज की आमदनी खर्च का बात करें तो वो दलितों के और आदिवासियों से भी नीचले स्थान पर है। मुस्लीम समाज पहले से पिछड़ा होने के कारण कोई भी उद्योग, व्यापार में नहीं जूड़ जाता और आजीवन किसी प्रकार से जिंदगी गुजारते है। भारत सरकारने अल्पसंख्यांकों के लिए अलग कई योजनाएँ बनाई है लेकिन उसकी जानकारी गरीब मुस्लीम परिवार तक नहीं मिलती। इस योजना का वे फायदा भी नहीं उठा पाते। केवल योजनाएँ कागजात पर ही रह जाती है। इसलिए जर्राजी अपनी कविता के माध्यम से बताना चाहते है कि,

"अब न कोई किताब आएगी
न कोई नबी आएगा।
मुसलमानों के हालात में
कौन बदलाव लाएगा।"[६]

इस कविता के माध्यम से हमें समझना चाहिए कि, परिवर्तन हमें खुद ही करना होगा। संघर्षमय जीवन हमें जीना होगा तब जाकर हम परिवर्तन कर पायेंगे।

४. राजनीतिक समस्या :-

मुस्लीम समाज में अनेक समस्याएँ है। इसमें मुस्लिम लोग बेरोजगार है, अंधविश्वास है, शोषण, मानसिक दुरावस्था, पारिवारिक तनाव, जातियता, इसी प्रकार से राजनीतिक समस्या भी भारतीय मुस्लीम समुदाय में देखने मिलती है। मुस्लिम समुदाय को भावनात्मक मुद्दों के बहकावे में न आकर अपनी वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए राजनीति को एक और के तौर पर इस्तेमाल कर लेना चाहिए। उन्हें मजहबी लीडर न होकर सामाजिक नेतृत्व करनेवालों की जिम्मेदारी देना चाहिए। जर्राजी ने भारतीय मुसलमानों का यथार्थ जीवन तथा इस्लामिक दर्शन को स्पष्ट किया है।

"अब तस्बियों मे उलझे है, इबादत में है खडे,
दुश्मन यही चाहता है कि मस्जिद में ही रहे पडे।"[७]

सामाजिक, आर्थिक पक्ष पर पिछडे होने के कारण मुस्लीम समाज की राजनैतिक स्थिति दयनीय है। राजनीति में मुसलमानों की भागीदारी मात्र मतदान देने तक सीमित है। उन्होंने ने शिक्षित बुदिधजीवीयों को राजनीति में कार्य करने के लिए बिनंती करते है,

"मै जर्रा हात होडा हूँ, करूंरिं बिनंती मैं मौलाना
चलो मिलकर करेगें हम कौम उद्धार मौलाना"
बुदिधजीवी, उलेमा, साथ आए कौम के लीडर
बदल देंगे मुसलमां को दुआ करो तुम मौलाना।"[८]

मुसलामनों की राजनीतिक भागीदारी भी सुनिश्चित की जाए। तभी शायद उनके साथ न्याय हो सकता है।

Scanned with CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

५. धार्मिक समस्याएँ :-

तत्कालीन समय में मुस्लीम समाज विभिन्न संप्रदायों, जातियों, उपजातियों में विभाजित हो गया है। अब मुस्लीम केवल शिया और सुन्नी नहीं है बल्कि वहाबी, खादीयानी, अहले हदीस, तबलीकी के साथ-साथ कुरेशी, बागवान, तंबोली आदी में भी विभाजित हो गया है। अब इसका विभाजन आधुनिक शिक्षा ग्रहण करनेवाले मुसलमान और परंपरागत शिक्षा प्राप्त करनेवाले मुसलमान इस प्रकार हो रहा है किंतु यह सब परिस्थितियाँ डॉ. जर्रा काझी के अनुसार मुस्लीम मौलवीयों ने की है वे कहते है,

"अल्लाहमियाँ देखेगें.... ! " बोलकर,
मस्जिद में ही बुला रहे थे !
दोजख़ का डर दिखा-दिखाकर
वही पर सुला रहे थे !!"[९]

इन तमाम परिस्थितियों का कारण आपसी मनमुटाव है। हम समूह में बंटने के कारण ही आज मुसलमानों की यह दयनीय अवस्था हो गई है वरना एक जमानें में मुसलमानों का राज पूरी दुनिया पर कायम था। वे कहते है,

"ये आपसी बेबनाव का ही, नतीजा है मेरे दोस्तो !
जो कभी सरबुलन्द था, वो सबसे पीछे चल रहा है !!"[१०]

निष्कर्ष :-

डॉ. जर्रा काझी ने अपने इल्म इस वैचारिक कवितासंग्रह से भारतीय मुस्लिम समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। जर्राजी का कहना है कि जबतक भारत के सभी लोग एकसंध और मानसिक रुप से सशक्त नहीं बनते, भारत महासत्ता नहीं बन सकता। इसलिए भारत को सक्षम राष्ट्र बनाने के लिए ये प्रयास परमआवश्यक है। आज भारती की जनसंख्या १३१ करोड के आसपास है और मुसलमानों की २५ करोड के आसपास है। उनमें से बहुतांश मुलसमान पिछडे हुए है। इसकी जानकारी के लिए सच्चर आयोग रंगनाथ और महेमुदर्ररहमान कमेटी का रिपोर्ट आप देख सकते है। इतने भारतीय लोग पिछडे है तो भारत महसत्ता कैसे बन सकता है ? इसलिए भारत के मुसलमानों को जागृत करने का कार्य भी अब राष्ट्रीय कार्य होना चाहिए। इस रचना से मुसलमानों का इतिहास, इस्लाम की सही फिलॉसॉफी और राष्ट्रीय एकता को महत्व दिया गया है। इस रचना का निर्माण सोदृश्य है। उद्देश केवल इतना ही है कि भारतीय मुसलमान मानसिक रुप सें सशक्त बने। जब व्यक्ति मानिसक रुप से सशक्त बनात है तो वह आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी आपने आपको सक्षम बनाने की कोशिश करता है। अपने आप को पुन:स्थापित करता ही है। इसलिए मुस्लिम समाज को मानसिक दृष्टि से सक्षम बनाना आवश्यक है। इसलिए भारतीय मुसलमानों में से किसी को या कुछ समविचार लोगों को एकत्र आकर, इस काम को करना अनिवार्य है। मुसलमानों के भीतरी समस्याओं के जिम्मेदार स्वयं मुसलमान ही है। मुसलमान समाज पर प्रभाव डालनेवाला संगटन अभी भी मुसलमानों में निर्माण नहीं हो सका है। आज भी मुसलमानों के पास उनके बेहतरी के लिए उचित उपाय एवं योग्य दिशा नहीं है। मुस्लीम समाज के विकास के लिए राष्ट्रीय संगटन की आवश्यकता है। इनका आपसी संबंध बढना आवश्यक है। अपने शोध का समापन मैं उन्ही की पंक्तियों से करना चाहूँगी।

"वक्त आया है, अब भी जाग जाओ मेरे भाईयों,
क्योंकि मुर्दार कौम का कोई निहबान नही होता।"[११]

संदर्भ सूची :-

१. इल्म - डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ९२
२. इल्म - डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ७२
३. इल्म-प्रास्तावना, डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ९
४. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ७०
५. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ५९
६. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ६०
७. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ६१
८. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ७५
९. इल्म-, डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ६४
१०. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ३१
११. इल्म- डॉ. जर्रा काझी, पृ.क्र. ५९

❑❑❑

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602

Scanned with CamScanner